69

जुलाई-दिसम्बर, 2015

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

हमारे समय में साहित्य 5
अशोक वाजपेयी

उपनिषद्, भगवद्गीता एवं योगवासिष्ठ 14
सच्चिदानन्द मिश्र

सर्वहारा वर्ग की अवधारणा : कार्ल मार्क्स एवं राममनोहर लोहिया के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन 25
अशोक अहिरवार

पूर्वी उत्तरप्रदेश : दो प्रमुख विचारधाराओं के टकराहटों की भूमि 31
सर्वेश पाण्डेय

मुगल कालीन बुन्देलखण्ड की सामाजिक स्थिति 43
बी.के. श्रीवास्तव

भारतीय दर्शन की अन्तर्धारा 54
अनुराग पाण्डेय

बौद्ध परम्परा में पारिवारिक मूल्य एवं सद्भाव 60
राघवेन्द्र प्रताप सिंह

वैदिककालीन शिक्षा व्यवस्था 66
बीना सिंह

महिला आरक्षण बिल और महिला सशक्तिकरण 76
आफरीन खान

मुक्तिबोध और 'अँधेरे में' 83
छबिल कुमार मेहेर

औपनिषद् सृष्टि-विज्ञान 100
संजय कुमार

भारतीय संविधान और हिन्दी साहित्य 106
सर्वेश पाण्डेय

Scanned with CamScanner

औपनिषद् सृष्टि-विज्ञान

संजय कुमार

भारतीय तत्त्वज्ञान तथा दर्शन की उत्सभूमि उपनिषदों को माना जाता है। जीव एवं जगत् विचार से ओत-प्रोत आत्मभाव का प्रकाशन ही उनका मूलोद्देश्य रहा है। वेदों के पश्चात् आरण्यकग्रंथों में जो आध्यात्मिक जिज्ञासा, चिन्तन, मनन और स्वानुभूति की प्रक्रिया विकसित हुई, उसी का सुव्यवस्थित एवं परिपक्व स्वरूप उपनिषदों में दृष्टिगोचर होता है। उपनिषदें वे आध्यात्मिक मानसरोवर हैं, जिनसे ज्ञान की विभिन्न धाराएँ निकल कर सम्पूर्ण वसुधा तल पर मानव मात्र के लौकिक एवं पारलौकिक अभ्युदय के लिए प्रवाहित होती है। भारतवर्ष में उदीयमान सांख्य-योग, न्याय-वैशेपिक, मीमांसा-वेदान्त जैन एवं बौद्ध आदि सभी दर्शनों की आधारभूमि उपनिषदें ही हैं। उपनिषदें हमारी ज्ञान परम्परा की अक्षय निधि हैं। उसमें अतीत, वर्तमान और भावी जीवन के श्रेयषता के साथ-साथ संसार सृष्टि को भी विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है।

संसार-सृष्टि ही ब्रह्मप्रसाद की विमल पुंज से सृजित उपनिषदों की थाती है। वस्तुतः यह संसार जो हमारे सम्मुख विद्यमान है, उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ही उसका कारण है। ब्रह्मा की इच्छा शक्ति से यह संसार उत्पन्न हुआ है, जिसे हमारी परम्परा सृष्टि कहती है। यह सृष्टि विविध तत्त्वों के समवेत से अपनी प्रक्रिया पूरी करती है। उसका सुसंगठित एवं क्रमबद्ध विकास ही विज्ञान का आधारभूत ढांचा है। विज्ञान सामान्य ज्ञान से भिन्न विशेष प्रकार का ज्ञान होता है। विज्ञान का विशेष ज्ञान किसी वस्तु की विविध रूपता को इस भांति प्रकाशित कर देता है कि उसमें संशय के सभी द्वार बन्द हो जाते हैं। संशयहीन व यथार्थज्ञान ही विज्ञान है। सृष्टि के सम्बन्ध में मानव-मन अनादिकाल से ही विचार-विनिमय करता चला आ रहा है। मानव के इस विचार प्रवांह को स्थिरता प्रदान करने के लिए ही उपनिषदें सृष्टि का यथार्थ उपदेश देती हैं। यह उपदेश कल्पना पर नहीं, यथार्थता और परीक्षण पर आधारित है। अचानक नहीं बल्कि क्रमबद्धता को प्रकट करता है। आविर्भाव नहीं, विकास दिखाता है। कल्पना नहीं, प्रमाण देता है।

संसार सृष्टि के विषय में हमारे सभी दर्शनों के अपने-अपने मत हैं। कोई पांचतत्त्व की बात करता है और कोई चार ही तत्त्वों में सृष्टि सर्जना कर देता है। परन्तु मूल प्रश्न यह है कि ये तत्त्व आए कैसे और उनका कैसे विकास हुआ? 'नासदीयसूक्त'[1] में बताया गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व कुछ था ही नहीं। पृथ्वी, आकाश, पाताल, सूर्य, चन्द्र कुछ भी नहीं था। ऐसी स्थिति में ब्रह्मा को संसार सृष्टि की इच्छा उत्पन्न हुई –

कामस्तदग्रे समवर्ततााधि मानसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरबिन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।।[2]

Scanned with CamScanner